Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-359-362

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 359-362
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. आरती कुमारी

शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. अरुण कुमार

अवकाश प्राप्त प्राचार्य, मुंशी सिंह मीरा बाई महिला महाविद्यालय, मोतिहारी.

Corresponding Author :

आरती कुमारी

शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियों का मूल्यांकन

गीतांजलि श्री हिंदी कथा-साहित्य का एक सुप्रसिद्ध नाम हैं। इन्होंने उपन्यास, कहानी, लघु- कथाएँ और अनुवाद साहित्य आदि प्रमुख विधाओं में अपनी रचनाशीलता का परिचय दिया है। इनकी रचनाओं का अनुवाद कई भारतीय और यूरोपीय भाषाओं में भी हुआ है। इन्हें 'बनमाली राष्ट्रीय पुरस्कार', 'कृष्ण बलदेव वैद पुरस्कार', 'कथा यू. के. सम्मान', 'हिंदी अकादमी साहित्यकार सम्मान' और 'द्विजदेव सम्मान' से सम्मानित किया गया है। अभी ये समकालीन हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण महिला कथाकार हैं। अपने उपन्यास 'रेत-समाधि' के लिए 'बुकर पुरस्कार' मिलने पर ये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुविख्यात हो गई हैं।

समकालीन हिंदी कहानी के परिदृश्य पर गीतांजलि श्री का नाम अत्यंत आदर और सम्मान के साथ अंकित हो चुका है। लगभग इनकी चार दर्जन कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी प्रत्येक कहानी की कथा-वस्तु अलग-अलग परिवेश में रखी गई है। स्त्री-संघर्ष, स्त्री प्रतिरोध का स्वर, मध्यवर्गीय स्त्री का संघर्ष, आधुनिक नारी जीवन, सामाजिक, पारंपरिक और पारिवारिक रूढ़िया, साम्प्रदायिकता, मृत्युबोध, मध्यम-वर्गीय परिवार की समस्या आदि जैसे विषयों की विविधता इनकी कहानियों में देखने को मिलती है। इनकी प्रतिनिधि कहानियों में – 'अनुगूँज', 'बेल-पत्र', 'कसक', 'पिलाकी माने पथ', 'आजकल', 'मार्च माँ और', 'साकुरा', 'दरार', 'भीतराग', 'पीला सूरज', 'चकराधिन्नी', और 'इति' का विशेष महत्त्व हैं। इन कहानियों का अनोखा शिल्प पाठक की बरबस आकर्षित करता है। इन कहानियों की संवेदना पाठक के अंतर-मन को स्पर्श करने में पूर्णतः सक्षम हैं। इनकी प्रतिनिधि कहानियों के बारे में शाशिभूषण द्विवेदी लिखते हैं –"गीतांजलि की करीब तीस एक कहानियों में से ग्यारह कहानियों का चयन अपने आप में रखना मुश्किल काम है। इसलिए भी कि गीतांजलि की लगभग हर कहानी अपनी टोन की कहानी है और विचलन उनके यहाँ लगभग नहीं के बराबर है और यह बात अपने आपमें आश्चर्यजनक है क्योंकि बड़े-बड़े लेखक कई बार बाहरी दबावों और वक्ती ज़रूरतों के चलते अपने मूल टोन से विचलित हुए हैं। यह अच्छी बात है कि गीतांजलि श्री ने अपनी लगभग हर कहानी

में अपनी सिग्नेचर ट्यून को बरकरार रखा है।"[1]

वे आगे लिखते हैं – "लेकिन सवाल यह है कि गीतांजलि की कहानियों की यह मूल टोन आखिर है म्यार: एक अजीब तरह की भाषा और एक अजीब तरह की स्वानी। लेकिन में सारी अजीबिअतें ही उनके कथाकार को एक व्यक्तित्व प्रदान करती हैं।"[2]

"अपनी भाषाई ताजगी के चलते गीतांजलि श्री की कहानियाँ शुरु से ही पाठकों की चाकित और चमकृत करती रही हैं। वे सिर्फ नए अन्दाज की ही कहानियाँ नहीं लिखती हैं बल्कि वे इसे माँजती हैं, और कुछ नया बनाती हैं। शायद यही वह चीज़ है जो उन्हें अपने समय का बड़ा लेखक बनाती है।"[3] गीतांजलि श्री अपनी कहानियाँ के माध्यम से जीवन के विविध रंगों की शब्द प्रदान करती हैं।

'अनुगूँज' कहानी गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानी है। इस कहानी में दाम्पत्य जीवन में स्त्री-मन की कामनाओं और उसकी चिंता की उजागर किया गया है। कहानी की नायिका मुनिया अपने पति राहुल से बहुत प्रेम करती है। पति की बाँहों में मुनिया खुद को सुरक्षित महसूस करती है। वह हमेशा खुद को आईने में निहारती है और राहुल के लिए सजती-सँवरती है। लेखिका लिखती है – "मुनिया शीशे के आगे जाकर बैठ गई। बचपन से वह राहुल के लिए शीशे के आगे बैठती आई है, अपने हाव-भाव सँवारती आई है।... आदतन यह अपने नाज-नखरे देखने लगी।... राहुल देख रहा है... राहुल प्यार करेगा... इसका गुड़िया-सा सुकुमार रुप। बेखबर, बेदाश, निहायत बोशिकन..."[4]

स्त्री को बुढ़ापे की चिंता होती है, क्योंकि उसके शरीर का आकर्षण समाप्त हो जाएगा। मुनिया को भी बुढ़ापे की चिंता सताने लगती है कि क्या राहुल वैसे बुढ़ापे में भी उतना ही प्यार करेगा, जितना कि आज करता है। "मुनिया हैरानी से शीशे में देख रही थी। मोम की गुड़िया पिघलने लगी। किसी कन्फेक्शनरी की सजी दुकान की तरह लगने लगी।... उसका फवता शरीर पेस्ट्री के तरह फुला हुआ चिपचिप करने लगा। वह चु रही थी, मक्खन की तरह। वह कुछ नहीं थी, केवल फच से फट पड़नेवाला रसीला फल थी, जो किसी और के मुँह में चूस जाता है। उसे ताज्जुब हुआ, ...। यह राहुल को भा" सकती न?"[5]

'बेल-पत्र' गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है। इस कहानी में धार्मिक विषमता के साथ-साथ स्त्री-संघर्ष को रेखांकित किया गया है। एक सुशिक्षित मुस्लिम युवती फातिमा एक हिन्दू युवक ओम से प्रेम विवाह करती है। तो कैसे समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता / धार्मिक विषमता के कारण उसे अपने परिवार, समाज, हर जगह संघर्षों का सामना करना पड़ता है। गीतांजलि श्री ने इसे बड़ी सजगता और सहजता से उजागर किया हैं – "यह छोटी-छोटी लड़ाइयाँ ही असली हैं। बड़ी लड़ाई लड़ना आसान है। उन्हें गर्व से लड़ते हैं हम, अभिमान से मर-मिटते हैं। उनके लिए पह छोटी लड़ाइयाँ... कीड़े की तरह घीनोनी, दीमक की तरह लग जाती हैं, खोखला करती जाती हैं... इतनी छोटी होती हैं कि बड़ी-बड़ी स्वाभिमानी रोबदार का लड़ाइयों से जोड़ कर देखना मुश्किल हो जाता है।"[6]

'कसक' एक ऐसी युवती की कहानी है जो जीवन को पूरे आनंद के साथ भरपूर जीती है और अंत में तेरहवीं मंजिल से नीचे कूदकर अपना जीवन समाप्त कर लेती है। उसके लिए मृत्यु जीवन का हिस्सा है। वह हर पल को आनंद से जीती है। अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर वाइल्ड लाइफ प्रेज़ेंवेशन सोसाइटी के लिए काम करती है तथा वह पर्यावरण समस्याओं पर लेखन का काम भी करती रहती है और वह जीवन को जितने आनंद से जीती है उतनी ही आनंद से मृत्यु की स्वीकार कर अपना जीवन समाप्त कर लेती है। इस पर

उसकी सहेली कहती है – "पूछना चाहती हूँ उसे, क्या था तुम्हारे मन में, जब तुम उड़ती हुई नीचे चली आ रही थी, उस तेरहवीं मंजिल से। क्या तब भी तुम जीवन के भीतर थी"।[7]

'पिलाकी माने फथ' कहानी हमें समय के साथ परिवर्तन का संदेश देती है। क्योंकि विकास के लिए समय के अनुसार ढलना आवश्यक है। कहानी का नायक लेखक है। वह परम्परागत विचार को लेकर चलता है, अपने आदर्शों की नहीं तोड़ता, जिसकारण उसकी रचनाएँ कई अच्छी पत्रिकाओं द्वारा अस्वीकृत कर दी जाती हैं। वहीं उसका मित्र राजू समय और समाज की माँग के अनुसार लिखता है, इसलिए उसकी रचनाएँ सरस्वती पत्रिका में छप जाती हैं और

हाथों-हाथ बिक जाती हैं। लेखक काफी संघर्ष करता है, आर्थिक तंगी से परेशान रहता है। राजू उसे समझाता है – " देख मुझे कोई झूठा घमंड तो है नहीं। मैं जानता हूँ किस तरह की कहानी की आज मांग है। इसी हिसाब से कलम रगड़ता हूँ।"[8]

'आजकल' साम्प्रदायिक उन्माद की कहानी है जिसमें साम्प्रदायिक हिंसा के प्रभाव और दुष्परिणाम की दिखाया गया है, कि किस प्रकार साम्प्रदायिक हिंसा में आम जनजीवन की भयभीत और तबाह कर देती है। पूरी कहानी में धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर लोग हिंसा और दंगा करते दिखाई पड़ते हैं। साम्प्रदायिक हिंसा से पूरा शहर प्रभावित रहता है। यहाँ तक कि मृत्यु को भय से लोगों को अपनी पहचान छुपाकर जीना पड़ता है। इस सच्चाई को गीतांजलि श्री ने बहुत यथार्थपूर्ण ढंग से उजागर किया है – "बैठे हैं बराम्दे में और रोम-रोम में ऐसा महसूस कर रहे हैं जैसे चारों तरफ में खरि इमारते लगे हैं और उनमें खुलती खिड़कीयाँ उनकी आँखे जिनसे हम पलायन की तरफ माँग रहे हैं, देखो नोट करो, कहीं कोशिश कर रहे हैं पहचान रहे, हो न हम हिन्दू हैं... हम हैं, हम ही गए, बक्शो हमें।"[9]

'मार्च माँ और साकुरा' कहानी हमें एक ऐसे चरित्र से परिचित कराती है जो 70 वर्ष की होने के बावजूद नई-नई चीजें सीखती-समझती है। 70 वर्षीय यह बुजुर्ग महिला जो अपने बेटे के साथ जापान आती है। जापान जाकर नई-नई चीज़ें करती है सीखती है और वहाँ के लोगों, वहाँ की भाषा, संस्कृति आदि के प्रति उसकी रुचि जग उठती है। वहाँ जापान में खिलने वाले साकुरा के फूल की खिलता देख वह भी खिल उठती है। "माँ जो सत्तर की नहीं, एक तरुणी थी, साकुरा के नीचे मस्त-मस्त फुदकते-नाचते...देखती गई...देखती गई...देखती गई।"[10]

'दरार' कहानी एक प्रतीकात्मक कहानी है। लेखिका ने कहानी के नायक कल्पेश के मन की दरार को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। कहानी की शुरुआत ही कल्पेश के चूने घर से होती है जिसे देखकर कल्पेश की अपनी स्थिति का भान होता है कि जिस तरह दरार पड़ गई है, उसी प्रकार कल्पेश के सभी रिश्तों में भी दरार पड़ गई है। उसकी पत्नी, दोस्त सब उससे दूर हो जाते हैं। कल्पेश जो एक संपन्न नगर युवक है, पत्नी के चले जाने पर अकेला हो जाता है। अकेलेपन के कारण उसके जीवन में निरसता और सुनापन छा जाता है। जिसकारण उसके मन के अनेक तरह के निसले विचार और भाव उपन्न होने लगते हैं। लेखिका लिखती हैं – "न कोई किसी एक को छोड़, दूसरे को नहीं चुनता, बस जीवन के परिचितपन से अबकर नए माहौल की तुनता।"[11]

वस्तुतः इस कहानी में अकेलेपन के कारण उत्पन्न कुण्था की रेखांकित किया गया है।

'भीतराग' मृत्यु की संत्रास की कहानी है। पचहत्तर वर्षीय बूढ़े, गिरचारी जी अपनी सेहत की लेकर काफी सतर्क रहते हैं। स्वस्थ, संतुलित और समय पर भोजन करते हैं, रोज व्यायाम करते हैं, अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखते हैं। लेकिन उनके मन में मृत्यु का डर और चिंता हमेशा बनी रहती है जो उनके दैनिकजीवन को प्रभावित करती है। गिरचारी जी के मित्र, निरानवे वर्षीय बच्चा ठाकुर के उनके घर आने से गिरचारी जी में बदलाव आता है। बच्चा ठाकुर गिरचारी जी के जीवन का एक नया अर्थ समझा जाते हैं – "देखो, गिरचारी, मन में कोई अरमान न दौड़े। जब करो तब मरो।"[12]

'पीला सूरज' कहानी में मृत्यु, भय के साथ-साथ अम्मीद के कई तरह के भाव समाहित हैं। कहानी की घटनाएँ रहस्यमभी ढंग से खुलती हैं। पूरी कहानी में श्री रहस्य बना रहता है। एक बड़ी, अधिकारी जो हर मीटिंग में शामिल होने जिनेवा जाती हैं। एक रात घनघोर बारिश में वह रास्ता भटक जाती हैं और वहाँ उन्हें अनजनाशरीर अनुभव होता है, जिसका संबंध उसके बचपन से है। इसके बचपन की एक स्मृतियाँ, मंडाबाई की रहस्यमयी बातें, और दुईया की मौत ये साड़ी स्मृतियाँ उस बरसात में उसकी आँखों के सामने उभरने लगती हैं। उस धनघोर बारिश के बाद जिनेवा की सड़कों पर निकला पीला सूरज उसके लिए हम्मीद की किरण साबित होता है – "मैं सोच रही हूँ कब सूरज उगेगा। जिनेवा की अन्तर्राष्ट्रीय इमारतों पर, देश के मेरे पुश्तैनी मकान पर, उन झोपड़ो पर... इस तूफ़ानी बरसात के बाद...।"[13]

'चकरधिन्नी' एक लेखिका की कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका के मन की व्यथा को रेखांकित किया गया है। वह हर रोज मोनोटोनक पर निकलती है, दुनिया से बेपरवाह, बिना खके चकराधिन्नी की तरह अपनी सोसाइटी में

चक्कर लगाती जाती है। जहाँ उसे कोनोनी के लोगों की बुरती नजरों का सामना करना पड़ता है – "सामनेवाला दिखा देता है हमें हमारी छवि। इसकी आँखों में आ जाता है कि लड़की तुम्हारा काजल बढ़ हो गया, मैंड्म आपका ब्रा स्ट्रेप कहाँ भाग रहा है, और पेट तो कपड़ाफाड़ आजादी पर तूल गया, और वैसे ये किस दब के कपड़े पहनती हैं आप...।"[14]

'इति' एक संयुक्त परिवार की कहानी है। प्रस्तुत कहानी में बदलते समय व व्यक्तिवाद के कारण संयुक्त परिवारों में व्याप-स्वार्थपन की उजागर किया गया है। कहानी का नायक पिता जो बड़े अफसर रह चुके हैं, अब रिटायरमेंट के बाद घर-परिवार के लिए भार बन जाता है। पिता की दौर परिवार के सभी सदस्य अलग-अलग रहने लगते हैं। पिता के अलावा कोई किसी से बात नहीं करता। लेकिन पिता का पेंशन वह डोर थी जो सभी को बाँधे हुए थी – "वह अदृश्य डोर थी जो हमें एक में बाँधे हुए थी और एक-दूसरे से अलग सही, हम सभी उसी पर डगमग-चल रहे हैं। जिसकी एक गौठ थी पेंशन।"[15]

गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियों के उपयुक्त मूल्यांकन से हम पाते हैं कि उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन के विविध रंगों को शब्द प्रदान किया हैं, जिससे इनकी कहानियों की संवेदन प्रकट होती है। इन कहानियों का अनोखा शिल्प पाठक के बरबस आकर्षित करता है। अतः इनकी कहानियों की संवेदना पाठक के अंतर्मन को स्पर्श करने में पूर्णतः सक्षम है। शशिभूषण द्विवेदी लिखते हैं –"गीतांजलि श्री की कहानियों को पढ़ते हुए लगातार महसूस होता है कि वे हर बार जिद करके उस राह पर जाना चाहती हैं जिधर कहानीकारों की भीड़ जाने से ठितकती, सकुचाती है। इसलिए उनकी कहानियाँ न सिर्फ औरों से अलग हैं, बाल्कि शब्दों से खेलनेवाली एक समर्थ कथाकार के रूप में यही इनकी शक्ति और ताजगी का रहस्य भी हैं।"[16]

कहना न होगा कि लेखिका गीतांजलि श्री की कहानियों में कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर भावनात्मक संवेदना, नारी मन की आकुल-व्याकुल और स्वच्छंदता का ज्वार सर्वत्र अंगराई लेता दिखाई देता हैं। कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर इनकी कहानियाँ हिंदी-कथा-साहित्य में 'मील के पत्थर' की तरह मजबूती के साथ खड़ी है। इनकी कहानियों में आधुनिक स्त्री की सोच कदम-दर-कदम प्रतिध्वनित होती है। इन्होंने हिंदी-भाषा-साहित्य को युग के अनुरुप एक नया और भव्यतम् मनोवैज्ञानिक आयाम प्रदान किया है।

संदर्भ सूची :

1. प्रतिनिधि कहानियाँ, गीतांजलि श्री, पृष्ठ-05, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, सं-2022.
2. उपरिवत, पृष्ठ-05.
3. उपरिवत, पृष्ठ-06.
4. उपरिवत, पृष्ठ-22.
5. उपरिवत, पृष्ठ-22,23.
6. उपरिवत, पृष्ठ-37,38.
7. उपरिवत, पृष्ठ-60.
8. उपरिवत, पृष्ठ-66.
9. उपरिवत, पृष्ठ-77.
10. उपरिवत, पृष्ठ-92.
11. उपरिवत, पृष्ठ-94.
12. उपरिवत, पृष्ठ-111.
13. उपरिवत, पृष्ठ-129.
14. उपरिवत, पृष्ठ-132.
15. उपरिवत, पृष्ठ-155.
16. उपरिवत, पृष्ठ-11.

•